मुल्ला जी नहीं रहे

नसरुद्दीन एक दिन काफी गम्भीर थे। बोले, "कौन कह सकता है ज़िन्दगी क्या और मौत क्या?" उनकी पत्नी वहीं बैठी थी। वो बोली, "तुम आदमी लोग भी अजीब हो। इतना नहीं जानते जब इंसान के हाथ-पैर अकड़ जाएँ और ठण्डे पड़ जाएँ तब वो मर जाता है।"

नसरुद्दीन को जवाब बहुत पसन्द आया। एक दिन वो पहाड़ों में गिरती बर्फ में चले गए। अचानक उन्होंने अपने हाथ-पाँव छुए। वे एकदम ठण्डे और सख्त थे। उन्होंने सोचा, यानी मैं मर गया। फिर मैं चल-फिर क्यों रहा हूँ। मुझे तो लाश की तरह लेट जाना चाहिए। उन्होंने ऐसा ही किया।

थोड़ी देर बाद कुछ लोग वहाँ से गुज़रे। वे आपस में बात कर रहे थे, "पता नहीं मरा है कि ज़िन्दा है।" नसरुद्दीन का मन था कि कह दे, "तुम्हे दिखता नहीं इसके हाथ-पाँव ठण्डे और अकड़े हुए हैं।" पर वे कैसे बोलते। लाश कहाँ बोलती है। खैर उन लोगों ने तय कर लिया कि ये मर गए हैं। उन्हें ले वे कुछ ही दूर पहुँचे थे कि आगे दो रास्ते दिखे। फिर से बहस छिड़ गई। कब्रिस्तान का रास्ता किस ओर जाता है। अबकी मुल्लाजी से रहा न गया। वे बोले "माफ करना भाइयो कब्रिस्तान दाईं ओर है। मैं जानता हूँ कि मुर्दे नहीं बोलते। मैंने नियम तोड़ा है पर सिर्फ एक बार के लिए। आगे ऐसा नहीं होगा।" चकमक

द सॉन्ग ऑफ द बर्ड से साभार

लुका छिपी.....

क्या-क्या दिखा तुम्हें और तुम्हारे दोस्तों को?

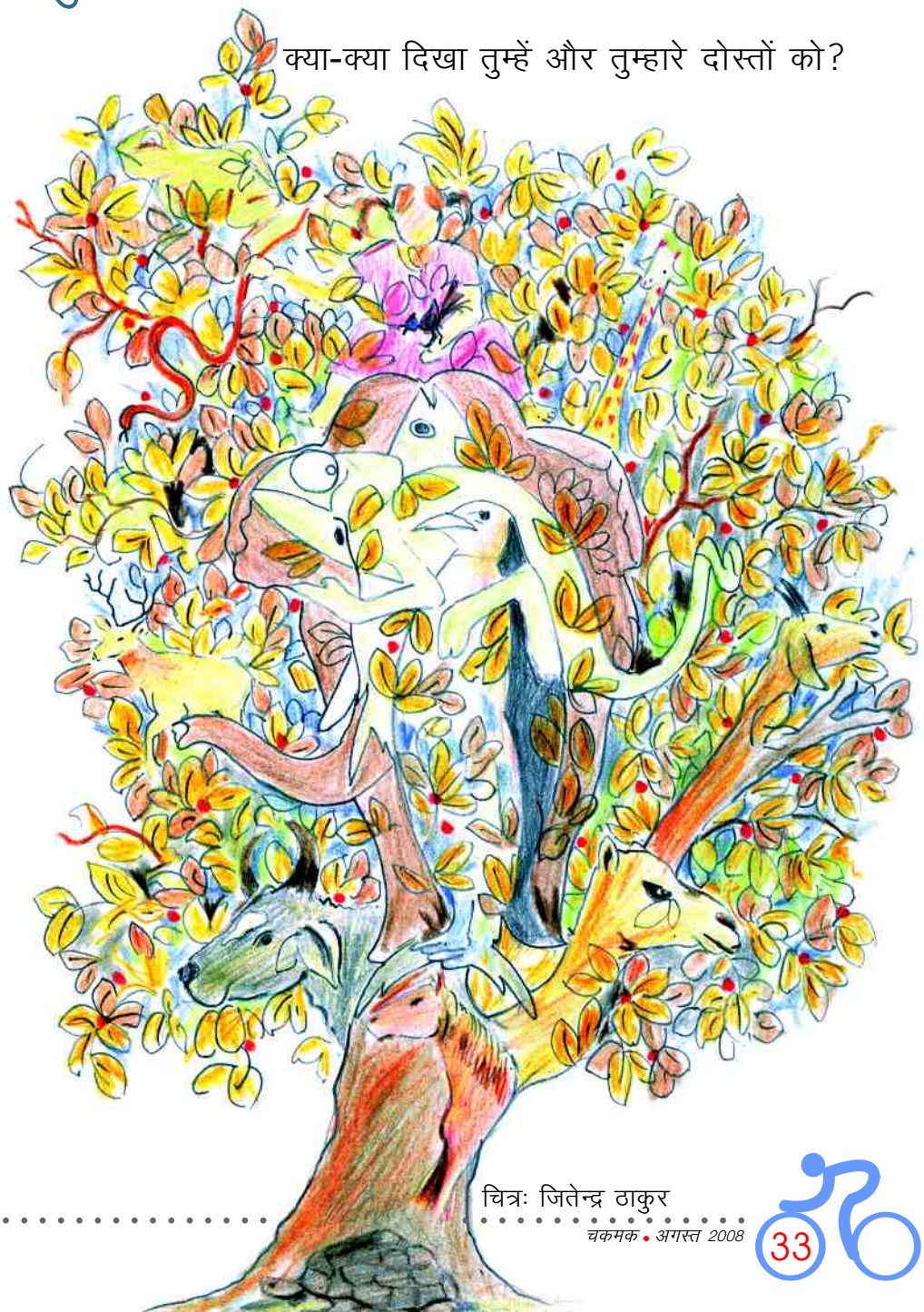

चित्रः जितेन्द्र ठाकुर